R.N.I. NO: MAH MUL/2011/40056

Published on 10th of every Month

Look N Learn

Vol No. 14 • Issue No. 07 • Mumbai • July 2022 • Price : Rs 5/- (Multilingual Monthly)

"गुरुप्पसाखाभिमुहो रमेज्जा"

मेरे गुरु की प्रसन्नता... मेरी सिद्धि और मेरी मुक्ती है!

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

In this 5th era, we do not have Parmatma, but we are lucky to have Pujya Sadhu sadhviji in our life. But due to our negligence, ignorance and improper behavior, we often bind bad karma due to our behavior with them. We should show utmost vinay whenever we go for darshan of Pujya Sadhu-Sadhviji

इस पाँचवे आरे (युग) में हमें प्रत्यक्ष रुप से परमात्मा की प्राप्ति संभव नहीं है, लेकिन हम भाग्यशाली है की हमारे जीवन में पूज्य साधु-साध्वीजी है लेकिन लापरवाही या अनुचित व्यवहार के कारण हमसे अक्सर कर्मो का बंध हो जाता है। पूज्य साधु-साध्वीजी के साथ हमारा अनुचित व्यवहार हमारा बूरे कर्मो (पाप) का बंध करवाता है। जब भी हम पूज्य साधु-साध्वीजी के दर्शन के लिए जाते है तब हमें उत्कृष्ट विनय भाव रखना चाहिए।

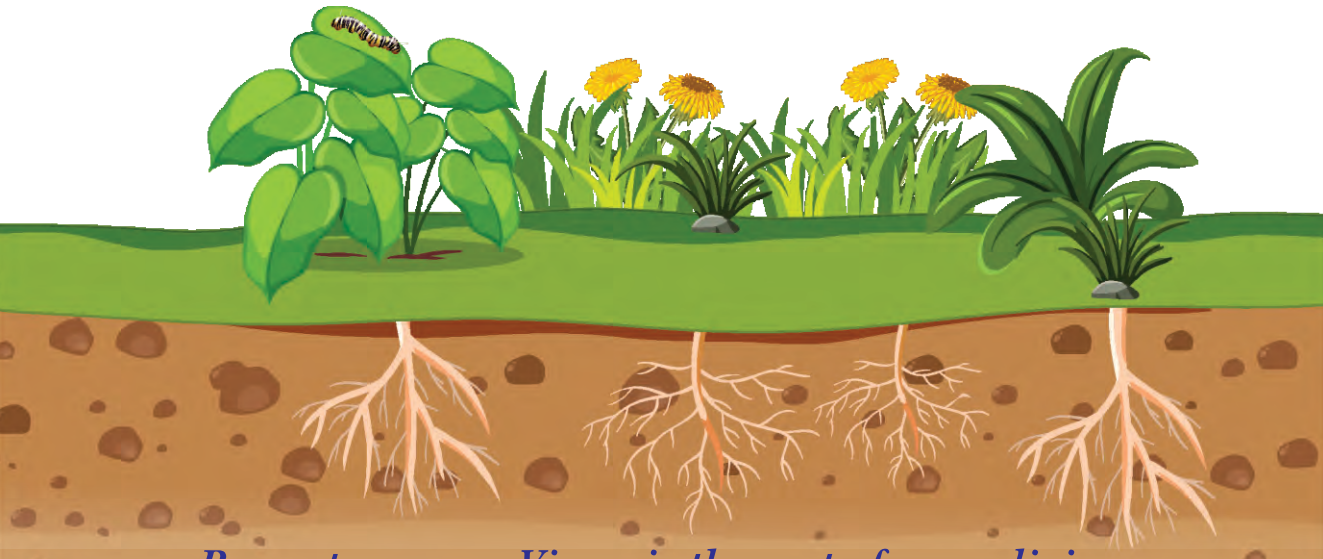

Parmatma says, Vinay is the root of our religion.

Vinay can transform all our vices into virtues, Vinay has the power to purify our soul.

परमात्मा कहते हैं विनय आत्मा का मूलभूत गुण हैं

हमारे तमाम अवगुणों को सद्गुणो में परिवर्तित करने की क्षमता विनय में हैं, अशुद्ध आत्मा को शुद्ध करने की शक्ति विनय में हैं।

"विनय धम्मं" - विनय धर्म हैं, विनय धर्म का मूल हैं

राग वितरागता में
परिवर्तित हो जाता हैं
Vinay transforms attachment
into absolute detachment

विनय से क्रोध क्षमा
में परिवर्तित हो जाता हैं
Vinay transforms
anger into forgiveness

अहंकार नम्रता में
परिवर्तित हो जाता हैं
Vinay transforms
arogance into humbleness

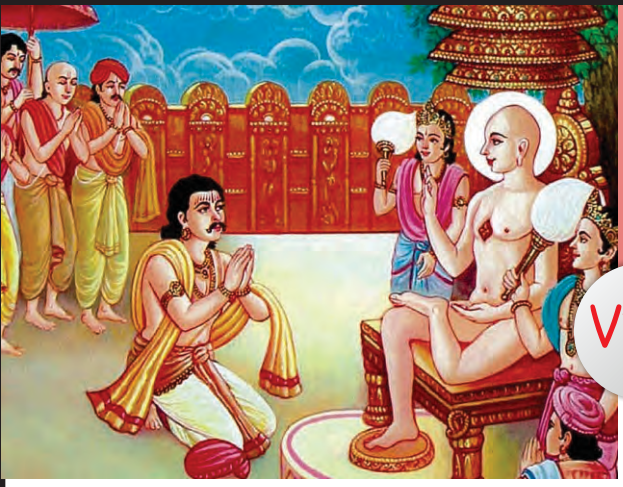

"अंगुठे अमृत वसे,
लब्धि तणा भंडार
गुरु गौतमने समरीए,
मनवांछित फल दातार"

Vinay

Try to learn this Gatha

प्यारे बच्चों,

यह गाथा किसकी याद दिलाता है।

जी हाँ! "गौतम स्वामी", गौतम स्वामी यानि प्रभुवीर के प्रथम गणधर, प्रथम शिष्य। गौतम स्वामी के 500 शिष्य थे, और उन्हें अपने ज्ञान का अहंकार था। जब वे परमात्मा के दर्शन के लिए प्रथम बार आए तब उनके ज्ञान का अहंकार कम होने लगा, Ego शून्य होने लगा और वह जो कोई भी क्रिया करते थे परमात्मा की आज्ञा लेकर ही करते थे। गौतम स्वामी में विनयभाव प्रगट हो गया। प्यारे बच्चों, गौतमस्वामी में विनयभाव प्रगट होने से उन्हें क्या प्राप्त हुआ? जिस ज्ञान को प्रगट करने में परमात्मा को 12½ साल लगे, वहीं ज्ञान गौतमस्वामी के परम विनय के कारण उन्हें 12½ सेकंड में प्रगट हुआ। बच्चों, आप भी जीवन मे सफल होना चाहते हो तो सबसे पहले विनयी बनना होगा।

Whose name comes to your mind when reading this gatha.

Absolutely correct, Gautam Swami. He was the very first gandhar/disciple of Parmatma Mahavir. Gautam Swami himself had 500 disciples and was egoistic about the knowledge he had. But the first time he did Parmatma Mahaveer's darshan, his ego melted. Thereafter, he took Paramatma's approval in everything. This shows his due respect for Parmatma. What did Gautam Swami gain from this respect that he had for Parmatma ? It took 12½ years for Parmatma Mahavir to attain Kevalgnan, but it took only 12½ seconds for Gautam Swami to attain same knowledge due to his Param Vinay towards Parmatma. So children, the master key to success is that of respecting others and their opinion.

Benefits of Vinay

One becomes beloved by all.
सबके प्रिय बनते हैं।

One gets Sadgati.
सद्गति मिलती हैं।

Memory power enhances.
यादशक्ति सतेज होती हैं।

One is respected by all.
मान सन्मान मिलता हैं।

One gets success everywhere.
सफलता मिलती हैं।

Aura gets purified.
ओरा शुद्ध होती हैं।

One binds Ucch Gotra Punya Karma
उच्च गौत्र पुण्य कर्म का बंध होता हैं।

Knowledge emanates from within.
ज्ञान प्रगट होता हैं।

Parmatma Says:

भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, तं जहा - सचिताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचिताणं दव्वाणं विउसरणयाए, एगसाडिएणं उत्तरासंग - करणेणं, चक्खुप्फासं अंजलिप्पग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं; जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण - पयाहिणं करेंति, करित्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ।

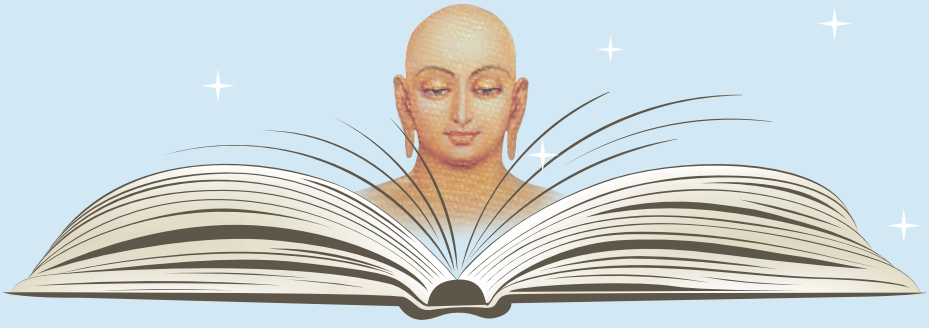

A Shravak always follows 5 Abhigam whenever he visits an Upashray for Sadhu-Sadhviji s darshan and avoids any disrespect

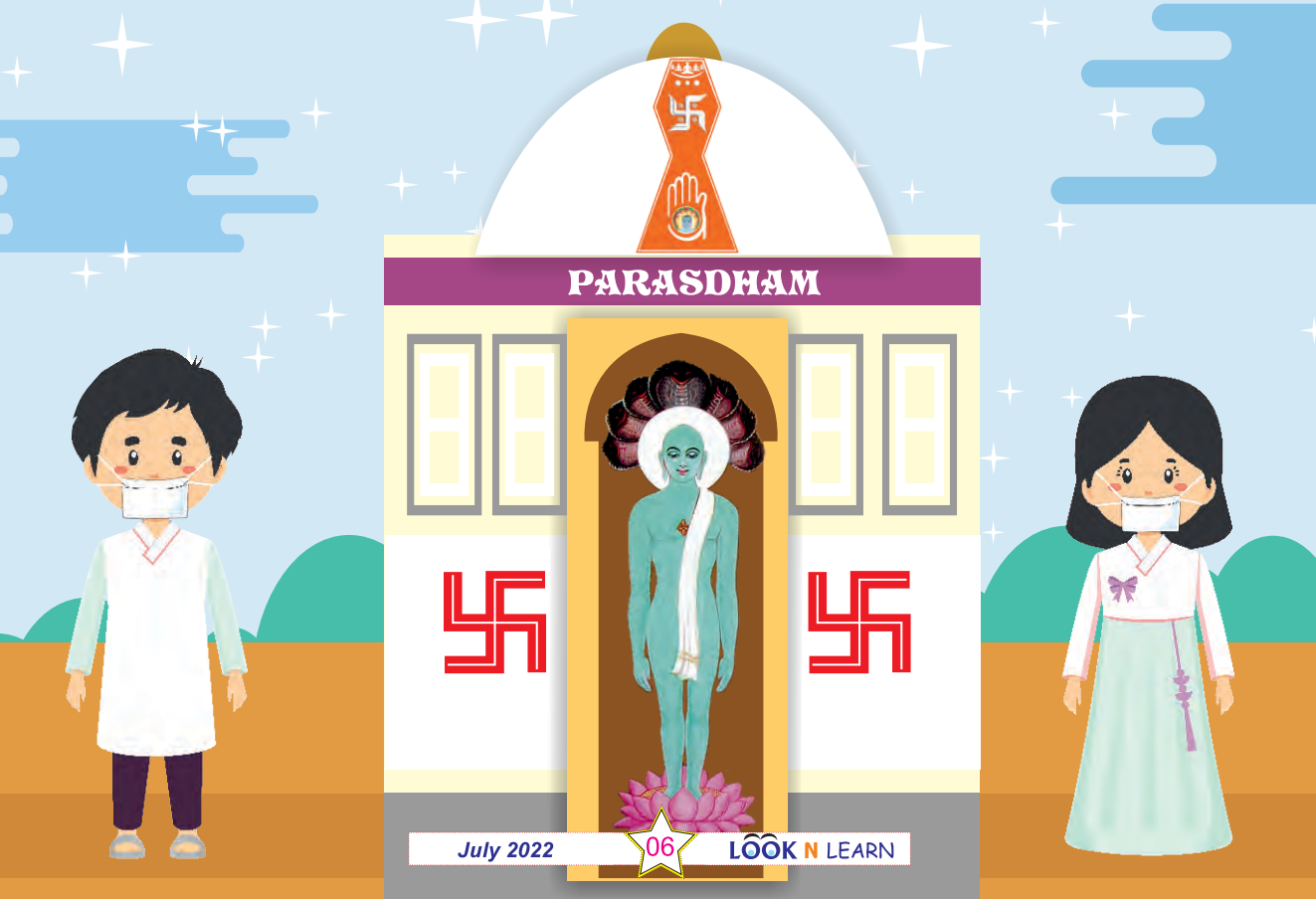

1. Sachet no tyag 1. सचेत का त्याग

To obstain from carrying Sachet(Living) items. Bags containing fruits and vegetables should be kept outside as they are living things. They bear the pain of birth and death every moment thus spreading negative energy.

सब्जी - भाजी की थैली बाहर रखना, क्योंकी उसमें जीव होते है जो हर पल तडप तडप कर मरते रहते है, इसलिए उनकी वेदना के वाईब्रेशन उपाश्रय के पवित्र वातावरण को खराब करते है।

2. Achet no vivek 2. अचेत का विवेक

Thoughtfulness about Achet(Non - Living) items. Keep away from the things which may distract our mind. Do not use comb, avoid making noise with the stick, avoid carrying plastic bags which make noise, avoid making noise while moving the chair, wear decent clothes. If Sadhu - Sadhvi are meditating or busy in something else, then do not insist on recitation of "Manglik" by them.

जिसमें हमारा मन भटकने लगे ऐसी वस्तु का विवेक रखना। कंगी को सिर पर नहीं घुमाना, कपडें योग्य होना, लकडी से ठकठक की आवाज न करना, साधु-साध्वी ध्यान या किसी अन्य कार्य में लिन हो तब मांगलिक का आग्रह न रखना, खडखड आवाज करे वैसी थैली use नहीं करना। खुर्शी का आवाज नहीं करना।

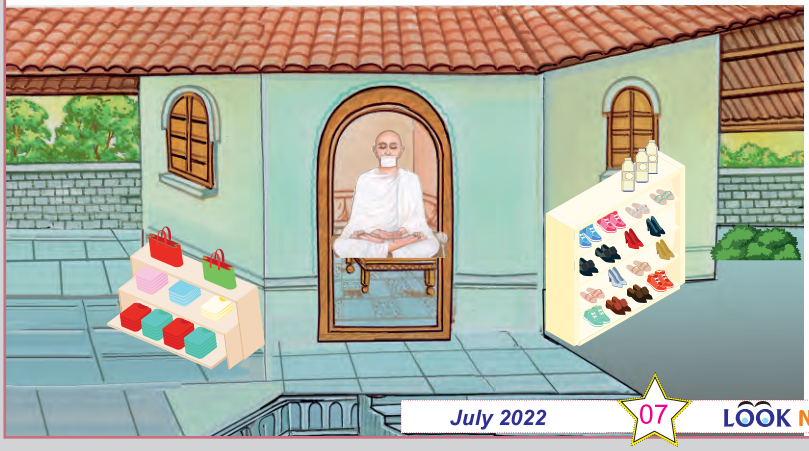

3. Uttarasan 3. उत्तरासन

Uttarasan means Muhapatti. To give abhaydaan to Vaayukaay jiv we should wear Muhapatti.To wear a Muhapatti or use a hand kerchief while talking.

उत्तरासन अर्थात् मुहपत्ति। वायुकाय की रक्षा हेतु मुहपत्ति पहननी चाहिए। मुहपत्ति नहीं तो रुमाल या अंत में मुहँ के आगे हाथ रख कर बोलना चाहिए।

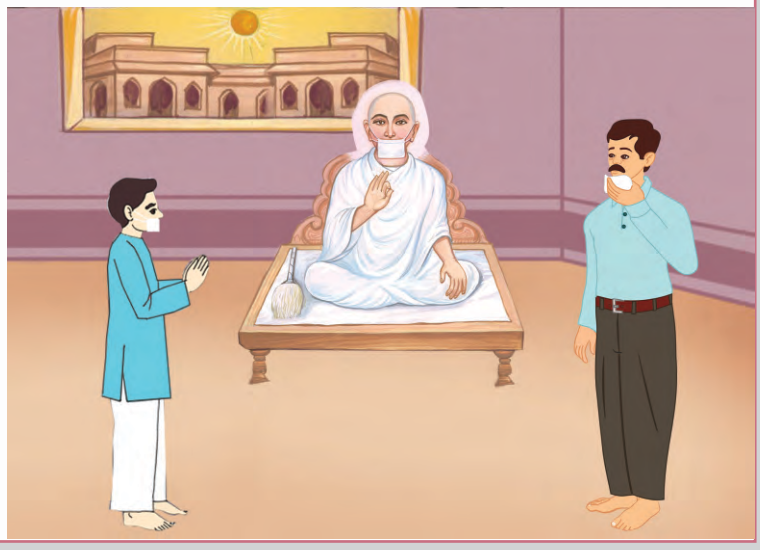

4. Anjalikaran 4. अंजलीकरण

To say Mathenam Vandami, to join hands as soon as you see Pujya Sadhu-Sadhviji and show ahobhaav is Anjalikaran.

संत-सतिजी को देखकर हाथ जोडना, अहोभाव प्रगट करना, मत्थएण वंदामि कहना वह अंजलीकरण है।

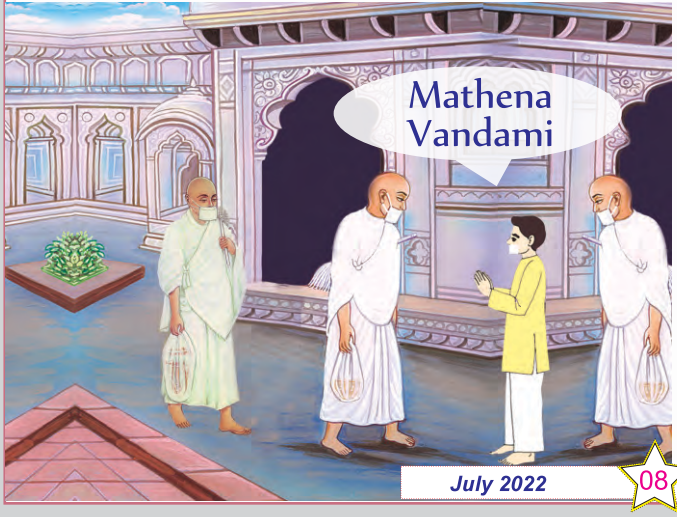

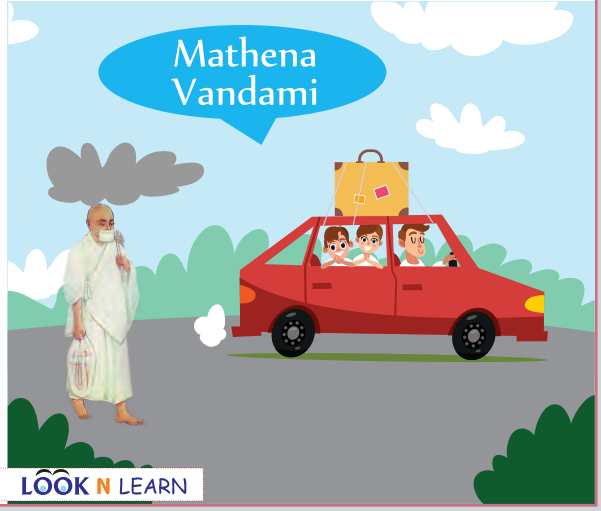

5. Concentration of mind   5. मन की एकाग्रता

गुरु या महासतीजी के सिवा दुसरी तरफ ध्यान होने से अशुभ कर्म का बंध होता है। कभी गुरु किसी अन्य को बोध वचन दे रहे हो तब भी हमारा ध्यान गुरु पर ही केंद्रीत होना चाहीए और हमें उनके पोजीटिव्ह वाईब्रेशन को ग्रहण करना चाहिए-जो हमारी ओरा को शुद्ध बनाते है।

We tend to bind karmas by wandering our mind in worldly things in presence of Sadhu-Sadhvi. Our Guru might be giving Bodh to somebody else at that time, but we should remain connected with his positive vibrations, which in turn will purify our aura.

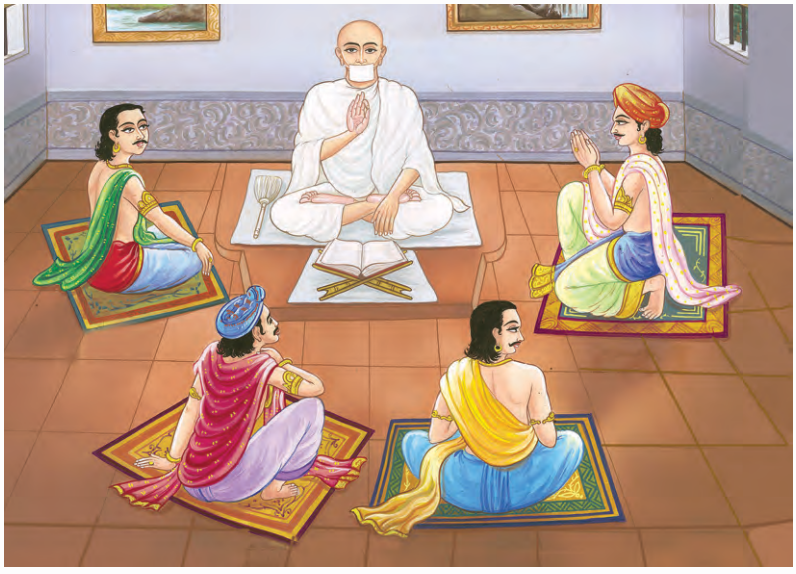

Inspired by Rashtrasant Param Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

Look N Learn, E-BOOK LAUNCH

The knowledge of 32 Aagams in your phone

Look n Learn E-book

Tatva | Stories | Games
Quiz | Art n Craft
Kanthastha | Activities
Much more... all in your Phone!

Join Now!

Send Jai Jinendra to +91 8104461579
Along with your Name & State

When you meet Pujya Sadhu-Sadhviji on the way...

If you are far enough and not able to come near then join your hands and say Mathenam Vandami from where you are or else

Come step down from the car. Remove your shoes, bow down with folded hands with respect and feelings and then say politely... "Mathenam Vandami ! Sukh Saatama Chho...??? Are you in need of anything ? Is there any 'Agnaa' for me...?"

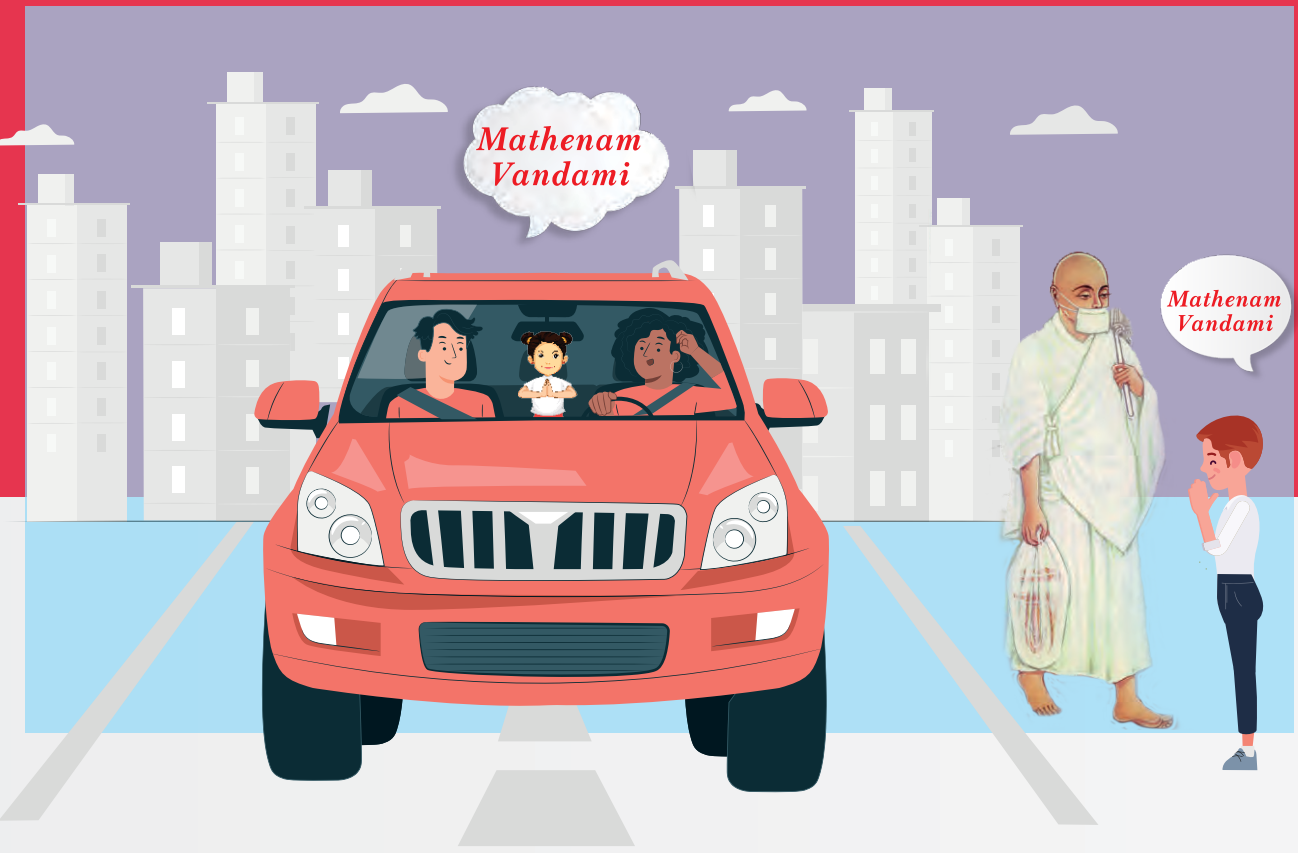

जब आपको पूज्य साधु–साध्वीजी रास्ते में मिले

यदि आप बहुत दूर हो और उनके पास जाना संभव नहीं है तो, तो फिर आको जहाँ पर भी हो वहाँ से दोनो हाथों को जोड़कर ''मत्थएण वंदामि'' कहना है।

यदि आप गाड़ी में हो तो गाड़ी से बाहर निकलना है, अपने जूते निकालने है, और दोनो हाथों को जोड़कर शिश झुकाकर उकृष्ट विनय भाव से नम्रतापूर्वक ''मत्थएण वंदामि! आप सुख-शाता में हो...? आपको किसी चीज की आवश्यकता है? ''मेरे लिए कोई आज्ञा है?'' कहना है।

-Gurubhakt Kothari Parivaar Ghatkopar

When you come to upashray for darshan...

You should arrange your shoes systematically and in line. You should sit properly and with discipline in front of pujya Sadhu-Sadhviji.

जब आप उपाश्रय दर्शन के लिए आते हो...

तब आपको अपने जूंतो को व्यवस्थित रुप से और लाईन में व्यवस्थित रखने चाहिए। आपको ठीक से, अनुशासन के साथ विनय भाव के साथ पूज्य साधु-साध्वीजी के सामने बैठना चाहिए।

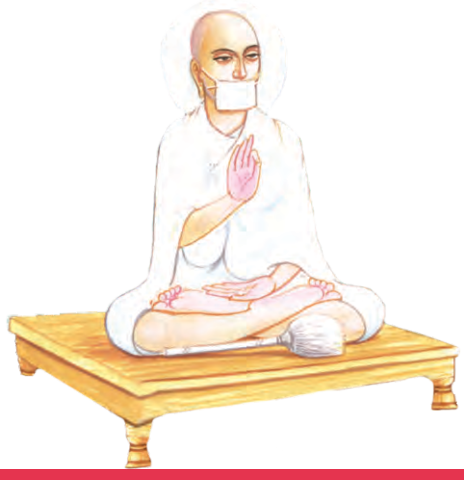

When you go for Pujya Sadhu-Sadhviji's darshan...

जब आप गुरुदेव या साधु-साध्वीजी के दर्शन के लिए जाते हो...

You should put your mobile on silent mode so that it does'nt disturb the Dharma kshetra environment.

One should also sit quietly. One who has control on one's speech, is the one who is able to digest knowledge within.

आपको आपके मोबाईल को सायलेंट कर देना चाहिए जिससे धर्मक्षेत्र के वातावरण में शांति बनी रहे।

हमें मौनपूर्वक बैठना चाहिए। जो वाणी का विवेक रख सकता है वही ज्ञानवाणी को अपने अंतर में उतार सकता है।

When you go for Pujya Sadhu-Sadhviji's darshan...

Be careful regarding your clothes (dress). Boys should not wear tight jeans or T-shirts or any type of fashionable clothes. The best dress for a good boy is white shirt - pant or kurta - pyjama..! Girls should not wear sleeveless T-shirt & kameez or jeans & tight pants. The best dress for a good girl is white salwar kameez..!

जब आप पूज्य साधु-साध्वीजी के दर्शन के लिए जाते हो...

आपको आपके वस्त्रो के लिए ध्यान रखना है। पुरुषो/बालको को चुस्त (टाईट) जीन्स और टी शर्ट या बनेठने कपड़े नहीं पहनने चाहिए। सफेद शर्ट-पेन्ट या सफेद कुर्ता-पायजामा अच्छे बच्चे का एकदम योग्य पहनावा है। लड़कीयो/बालिकाओ को बिना स्लिवस के टी-शर्ट, कुर्ती, कमीझ, जीन्स और चुस्त पेन्ट नहीं पहननी चाहिए। सफेद सलावर-कमीज लड़कीयों के लिए व्यवस्थित (उचित) पहनावा है। (योग्य पहनावा है।)

तिक्खुत्तो
आयाहिणं
पयाहिणं
वंदामि
नमंसामि
सक्कारेमि
सम्माणेमि
कल्लाणं
मंगलं
देवयं
चेइयं
पज्जुवासामि
मत्थएण वंदामि

When Pujya Sadhu-Sadhviji are preaching...

You cannot do Guru Vandana during Pravachan because, it breaks their link and the audience gets disturbed. At such a time, just fold your hands with bhaav and sit down quietly.

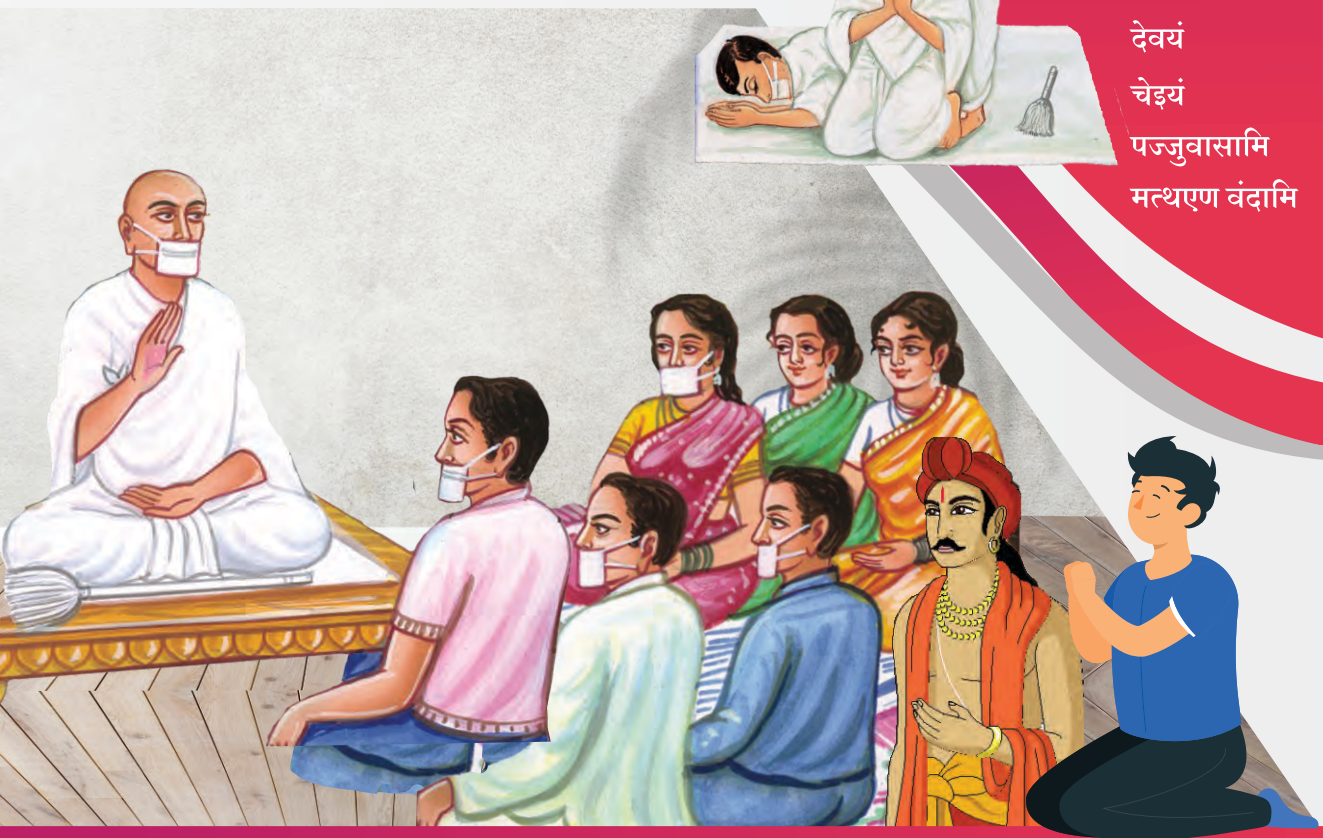

जब भी पूज्य साधु-साध्वीजी के प्रवचन चल रहा होता है तब...

चालु प्रवचन में विधीपूर्वक की वंदना नहीं करनी चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से पूज्य साधु-साध्वीजी को प्रवचन कहने में खलेल पहोंचती है और बाधारुप बनती है और सुननेवाले श्रोता का ध्यान भी भटक जाता है। इस समय हमें केवल दो हाथों को जोड़कर भाव वंदना करके चूपचाप बैठ जाना है।

When you go for the darshan of Pujya Sadhu-Sadhvivji...

Keep a distance of atleast three and a half feet, because that area is full of their Positive energy. Their auspicious Aura is filled with the energy of their Sadhana, while our Aura is full of negative energy..! If you want to go near, you have to take their permission first..!

And yes... a boy can touch Sadhu, a girl can touch Mahasatiji. A boy cannot touch Mahasatiji and a girl cannot touch Sadhu.

3½

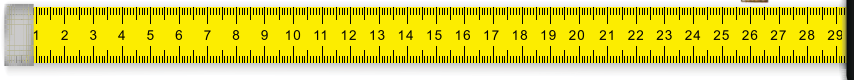

जब आप पूज्य साधु-साध्वीजी के दर्शन के लिए जाते हो...

पूज्य साधु-साध्वीजी के दर्शन करते समये हमें साड़े तीन फूट की दूरी पर खड़ा रहना चाहिए।क्योंकि उनकी साधना और शक्ति से समृध्ध ओरा और पोझीटीव एनर्जी उनके आसपास फैली होती है, और हमारी ओरा नेगेटीव होती है। यदि आपको उनके समीप (नजदीक) जाना हो तो पहले उनकी आज्ञा लेनी चाहिए।

और हाँ, लड़के साधु को स्पर्श कर सकते है। लड़कीयाँ महासतीजी को स्पर्श कर सकती है। एक लड़का कभी भी महासतीजी को स्पर्श नहीं कर सकता। एक लड़की कभी भी गुरुदेव और साधुजी को स्पर्श नहीं कर सकती यदी ऐसा हुआ तो हमें स्पर्श का दोष लगेगा।

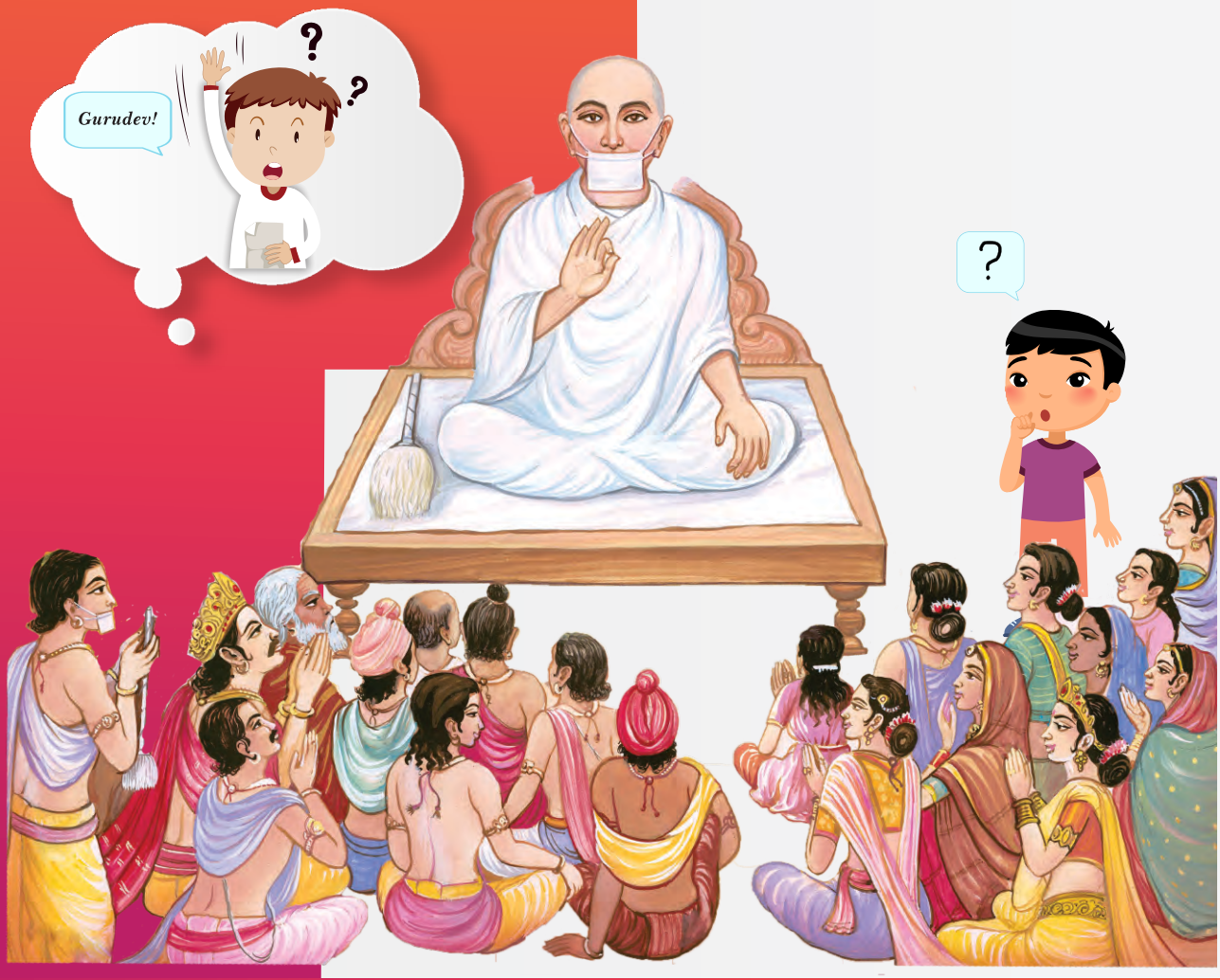

When Pujya Sadhu-Sadhviji are talking with someone ...

You should not interrupt them by calling them or by asking them anything... If we disrespect them, we bind "Antrai Karma". Because of "Antrai Karma", In future we don't get sanidhya of Guru.

जब पूज्य साधु-साध्वीजी किसी से बात करते हो...

जब पूज्य साधु-साध्वीजी अन्य किसी से बात करते हो तब उन्हें अंतराय नहीं देना... उनकी अशातना करने से ''अंतराय कर्म'' का बंध होता है। ''अंतराय कर्म'' के कारण, हमें भविष्य में गुरुदेव या साधु-साध्वीजी की प्राप्ति नहीं होती है।

Whenever Pujya Sadhu-Sadhviji are engrossed in sadhana/ meditation, having Gochari or are taking rest...

Avoid calling them to give darshan. You should not knock the door even if you have come from far distance or from out of station or even if you have to board a plane or a train. At this point of time you should be satisfied with bhaav darshan.

जब पूज्य साधु-साध्वीजी ध्यान-साधना में बैठे हो, आराम कर रहे हो या गौचरी में हो तब...

हमें उनके दर्शन का आग्रह नहीं रखना चाहिए। हमें दरवाजा भी नहीं खटखटाना चाहिए। भले ही हम कितनी दूर से आये हो या हमारे हवाई जहाज या ट्रेन का समय हो गया हो तब भी हमें दर्शन का आग्रह नहीं रखना चाहिए और भाव दर्शन से संतुष्ट होना चाहिए।

-Gurubhakt Mehta Parivaar

When you are walking with Pujya Sadhu-Sadhviji..

Never walk ahead of Pujya Sadhu-Sadhviji, we may disrespect them if the dust of our feet touches their body

But, if we walk behind them... and if by chance, the dust of their feet touches our body, then we are lucky!!

One who honours the dust of Guru's feet,
Multiplies one's good luck... !!

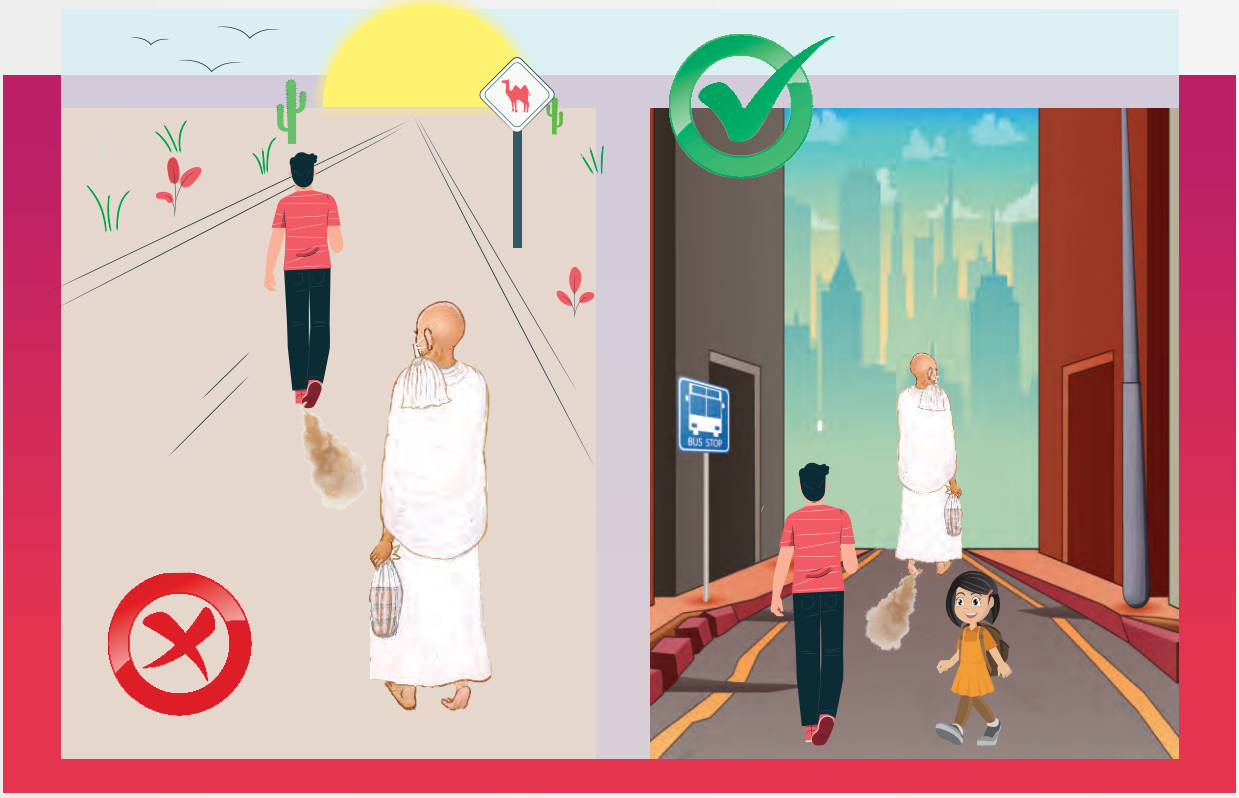

जब हम साधु-साध्वीजी के साथ विहार करते है...

हमे उनके आगे नहीं चलना है, ध्यान रखना है हमारे चलने की वजह से धूल- मिट्टी उनके शरीर को छू न ले यदी ऐसा होता है तो हम पूज्य साधु-साध्वीजी की अशाता-अविनय करते है।

यदि हम पूज्य साधु-साध्वीजी के पीछे चले तो, और भूल से भी उनके चरणों की रज हमें छू लेती हैं तो हम भाग्यशाली है।

जो गुरु चरण की रज को मस्तक पर चढाए...
वह अपने सौभाग्य को बढाता है।

Story Time : Guru... A Kalyan Mitra

Once Guru and his disciple were walking through the path of jungle. All of a sudden a poisonous snake appeared in front of them. On seeing the snake the disciple was frightened. Guru asked his disciple to catch the snake. The disciple without a single thought followed his Guru's Aagna and caught the snake.

A true disciple always follows Guru's Aagna!

On catching the snake he got bitten and poison started spreading in his body and he fainted.

Can you follow Guru Aagna no matter whatever is given?

Why did Guru give such an Aagna? What was the purpose behind it?

Since years, the disciple had the disease of Asthama ! Guru knew that if the snake bit his disciple, he would be cured of the disease and thus, Guru gave such an Aagna. The disciple expressed his heartfelt thanks towards his Guru he got cured of his asthma problem that he was facing since years.

"Mamah Labhoti Pehaai"

Guru's Aagna is always beneficiary for me

12 vows...

Ahimsa (Non-violence)
अहिंसा

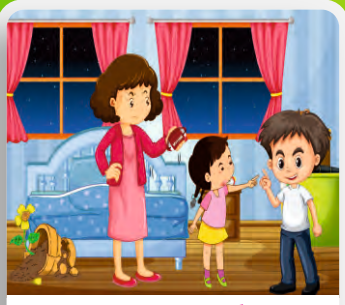

Satya-Truth
सत्य

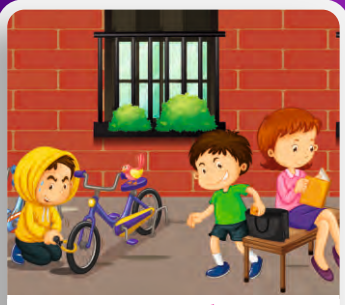

Non-stealing
अचौर्य

Celibacy
ब्रह्मचर्य

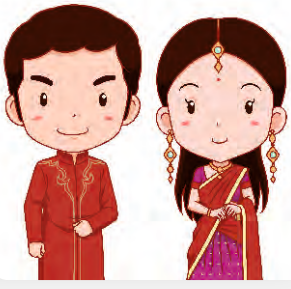

Non-Possessions
अपरिग्रह

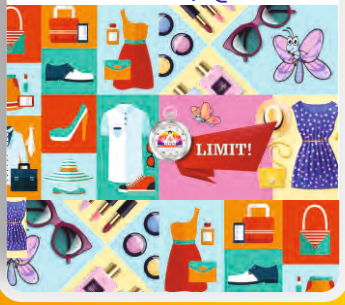

Limits of directions
दिशा की मर्यादा

Limiting the things of dialy usage
उवभोग परिभोग की मर्यादा

Giving up futile violent activities
अनर्थ दंड का त्याग

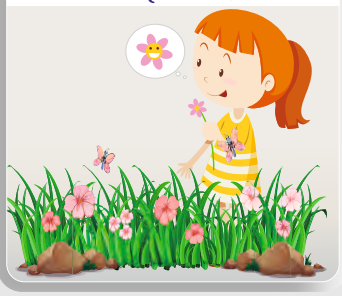

Samayika Vrata
सामायिक आराधना

Deshavakalika Vrata
देशावकालिक व्रत

Pausadha Vrata
पौषध व्रत

Vows of giving alms
सुपात्र दान की भावना

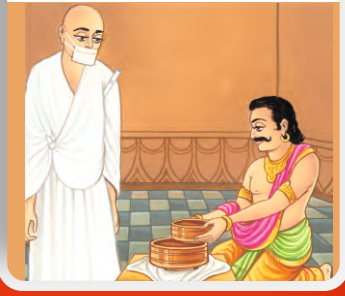

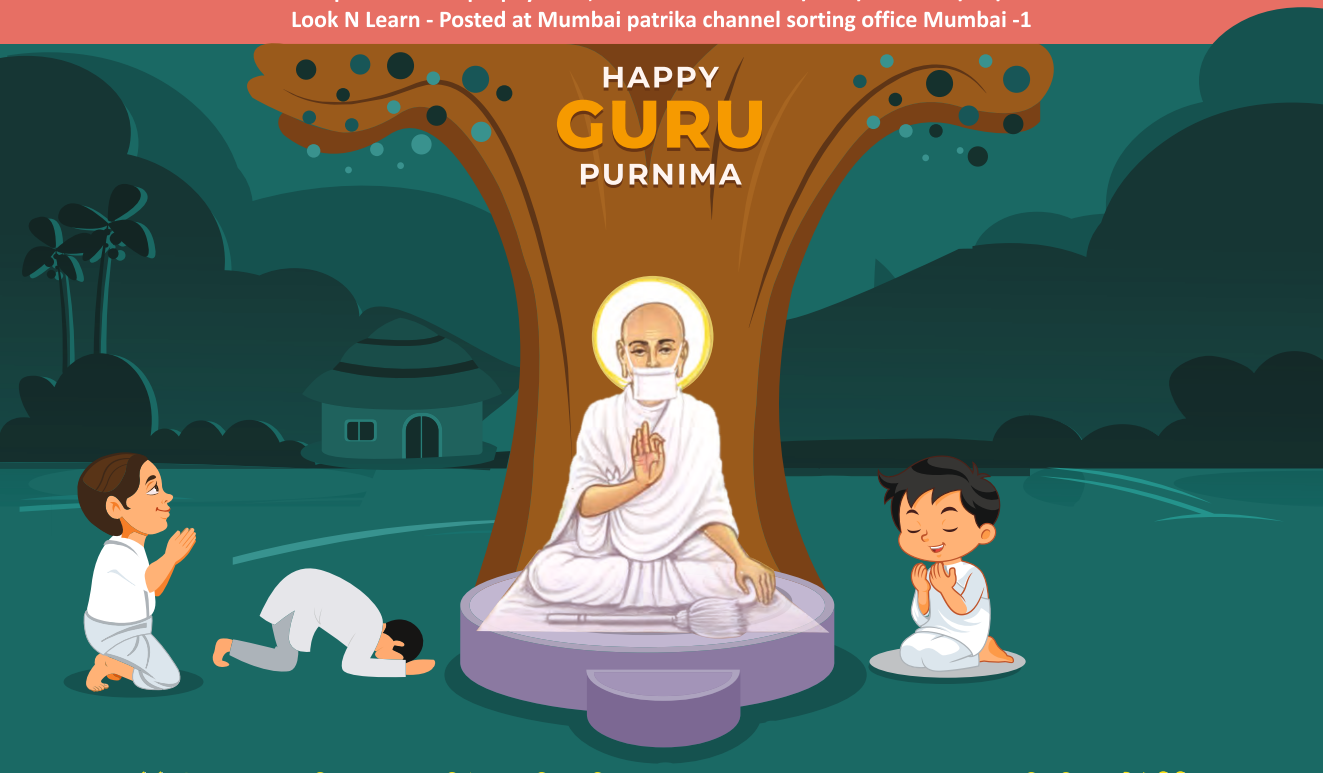

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 14, Issue: 07, Date: July 2022, Postal Registration No. MNE/171/2021-23.
Date of Posting / Date of Publication 10th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2021-23.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Printed, Published and Owned by Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Silk Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Published from 5, Munisuvrat Ashish CHS. Ltd. 3rd flr, Kama Lane, opp SNDT College,
Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth